International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 5 Issue 5 ||May. 2016 || PP.57-62

कश्मीरः ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य (कश्मीरी अस्मिता का विकास)

डॉ. हनुमान सहाय मण्डावरिया

व्याख्याता राजनीति विज्ञान राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिला दौसा, राज्य राजस्थान, (भारत)

ऐतिहासिक परिवेश विकास प्रतिमान

बाह्य शक्तियों को किसी देश के आन्तरिक मामलों में दखल या दिलचस्पी का विशेष अवसर केन्द्र व राज्यों के असामान्य सम्बन्धों की स्थिति में मिलता है। जहाँ राज्य व केन्द्र समूचे देश की राजनीतिक संस्कृति में एकरूपता व एकीकरण हो, यहाँ यह सम्भव नहीं हो सकता। विश्व में जहाँ जहाँ हस्तक्षेप हुआ है, वहाँ केन्द्रीय एवं उपक्षेत्रीय सत्ताओं में ही तनाव नहीं रहा, अपितु दो समाजों में पृथकत्व का बोध रहा है। कश्मीर के सम्बन्ध में भी उक्त बिन्दु विचारणीय है। प्रारम्भिक विवरणों से स्पष्ट है कि कश्मीर की ऐतिहासिक कालक्रम में अपनी एक विशिष्टता रही है। उच्च पर्वतीय श्रृंखलाओं से विनिश्चित भूगोल कश्मीर की संस्कृति व व्यक्तित्व को विशेष संजीदा बनाया है। परन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि यह सांस्कृतिक व्यक्तित्व क्या शेष भारत से भिन्न रहा है, या उसमें समरूपता रही है।

इस संदर्भ में यह भी स्पष्ट है कि कई या किसी एक कारक को अन्तिम निर्धारक चर नहीं माना जा सकता। यदि ऐसा ही होता तो बांग्लादेश पाकिस्तान से अलग नहीं होता। वस्तुतः दो राजनीतिक समाजों (स्वायत्त या उप) में अंतर्सम्बन्ध उनके अपने तारतम्य बोध व विशिष्ट हितों के संज्ञान व पूर्ति के अवसरों पर निर्भर करता है। प्रथम का सम्बन्ध ऐतिहासिक विकास क्रम से है तो दूसरे का सम्बन्ध तात्कालिक परिवेश में हितों की व्याख्या पर है। प्रस्तुत अध्याय में इसी दृष्टि से कश्मीर के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की विवेचना की जा रही है।

कश्मीर के भूगोल की तरह कश्मीर का इतिहास भी ऊँचे–नीचे, दुर्गम पहाड़ी घुमावयुक्त मार्गों वाला रहा है। कभी प्रकाशमान रहा है तो कभी अंधकारमय। वर्तमान में कश्मीरी अस्मिता के विकास में विभिन्न ऐतिहासिक घटनाक्रमों का विशेष महत्व रहा है। इसलिए कश्मीरी राजनीति के वर्तमान प्रारूपों को समझने के लिए कश्मीर के ऐतिहासिक परिवेश और भूगोल की विशेषताओं का उल्लेख करना उचित होगा। प्राचीन काल से जम्मू कश्मीर के निर्माण में तीन प्रमुख क्षेत्रों का योग रहा है। कष्मीर,जम्मू एवं लद्दाख। गिलगित और आस–पास का उत्तरी क्षेत्र स्वतन्त्र रियासतों और राजाओं के अधीन रहा है। परन्तु यह एकता भू–सांस्कृतिक अधिक रही है, प्रशासकीय कम। जम्मू–कश्मीर में एक राजा के अधीन प्रथम एकीकृत प्रशासन 1842 में ही स्थापित हो सका था। तब अंग्रेजों का संरक्षण पाकर राजा गुलाबसिंह ने जम्मू कश्मीर घाटी, लद्दाख और बालतिस्तान पर पूर्ण आधिपत्य जमा लिया था।'

राजतरंगिनी के प्रसिद्ध लेखक और 12 वीं शताब्दी के इतिहासविद कल्हण के अनुसार ईसा पूर्व 2450 से कश्मीर में सभ्यता का इतिहास प्रारम्भ होता है। जब गोनन्द प्रथम ने कश्मीर घाटी में राजशाही की स्थापना की थी। इसके उपरांत कश्मीर में सन् 1339 तक तेरह राजवंशों ने शासन किया। शेष भारत से कश्मीर का इतिहास तब जुड़ा जब सम्राट अशोक (274 से 237 ईसा पूर्व) ने सर्वप्रथम कश्मीर को अपने अधीन किया। इस दौरान कश्मीर घाटी में बौद्ध धर्म ने प्रवेश किया। बौद्ध भिक्षुओं ने ब्राह्मणवादियों के प्रभाव से क्षेत्र को मुक्ति दिलाई। परन्तु सन् 178 ई. में गौनन्द राजवंश पुनः सत्तारूढ़ हुआ। जिसने फिर कश्मीर में ब्राह्मणवाद लाने का प्रयास किया। परन्तु इसी दौरान शैववाद और ब्राह्मणवाद के बीच नया द्वंद्व फैला। इस संघर्ष में कश्मीर में शैववाद सफल हुआ, जिसके अनुयायी कश्मीरी पण्डित रहे हैं। राजा संधीमती के शासनकाल (1384) तक कश्मीर में हिन्दू शासन का स्वर्णकाल रहा। उसके बाद क्रमशः हास शुरू हुआ। सन् 1319 में पश्चिम तिब्बत का एक राजकुमार रिनछन सत्तारूढ़ हुआ जो शैववाद को अपनाना चाहता था। लेकिन कट्टरपंथी ब्राहम्णों के विरोध ने उसकी इच्छा पूर्ण नहीं होने दी। फलस्वरूप उसने इस्लाम धर्म अपना लिया। सन् 1338 में गैर कश्मीरी आक्रांत शाहमीर ने कश्मीर को अपने अधीन किया और इसी दौरान कश्मीर में व्यापक धर्म परिवर्तन हुए। तब से 250 वर्षों तक कश्मीरस्वायत्तशासी राज्य बना रहा। उसके बाद 1506 में कष्मीर की स्वतन्त्रता का हनन करते हुए शहंशाह अकबर ने कश्मीर पर अपना स्वतः स्थापित कर लिया। तब से मुगलों ने 1752 तक यहाँ शासन किया। इसके पश्चात् नादिरषाह आदि अफगान सरकारोंके भारत की ओर कदम बढ़े। उन्होंने कष्मीर पर भी अपना प्रभुत्व

जमाया। लगभग 67 वर्षों तक उनका शासन रहा। इधर रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिख षक्ति कमजोर हुई व उन्होंने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों का साथ दिया। पुरस्कार स्वरूप उन्होंने सिखों को इस प्रदेश पर अपना आधिपत्य जमाने दिया। सिखों ने 1819 में कष्मीर को अपने अधीन किया। प्राचीन काल से ही जम्मू प्रदेश डोगरा राजपूत वंष के आधीन रहा। 19 वीं शताब्दी के आरम्भ में जम्मू रणजीत सिंह के नेतृत्व में पंजाब के सिख षासन के प्रभुत्व में आ गया। रंजीतसिंह के तीन पोतों में से एक गुलाब सिंह ने जम्मू प्रान्त के अधीन सभी जागीरों पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया था। लद्दाख और बालतिस्तान का इलाका प्राचीनकाल में चीनी तिब्बत से सम्बन्ध रहा है, लेकिन 17 वीं सदी के आरम्भ में स्कर्दू के बालती कबीला प्रमुख ने इस पर कब्जा किया, जिससे लद्दाख एक स्वतन्त्र प्रान्त बन गया। बाद में कश्मीर के मीरशाह के वंशजों ने लद्दाख को कश्मीर का स्वायत्तशासी क्षेत्र बना दिया, जबकि कश्मीर के मुस्लिम षासकोंने लद्दाख पर विदेशी आक्रमण विफल कर दिए।

कश्मीर के दूरस्थ इलाकों में मिलनित का क्षेत्र प्रमुख है। 19 वीं सदी के आरम्भ तक इस पर तरखने राजवंश के स्वतंत्र राजाओं का शासन रहा, किन्तु 1842 तक गुलाबसिंह ने सिख सेना भेजकर अपना प्रभुत्व वहाँ स्थापित कर लिया। इस तरह 1842 तक राजा गुलाबसिंह ने जम्मू कश्मीर घाटी, लद्दाख और बालतिस्तान पर पूर्ण आधिपत्य जमा लिया था। 1857 गुलाब सिंह का निधन हुआ। इसके पश्चात् यह क्षेत्र डोगरा राजवंश के प्रभाव में आया। रणवीर सिंह ने 1885 तक इस वंश के यहाँ शासन किया। फिर प्रतापसिंह ने 1925 तक राज किया। उनकी कोई संतान नहीं थी, इसलिए इनके भतीजे महाराजा हरीसिंह ने सत्ता की बागडोर संभाली। 1952 में स्वेच्छा से सत्ता त्यागदेने के उपरांत उनके पुत्र कर्णसिंह को कश्मीर का सदर–ए–रियासत बना दिया गया। 1947 के पूर्व राजा हरिसिंह के शासनकाल में जम्मू–कश्मीर राज्य पाँच देशों : भारत, पाकिस्तान, चीन (तिब्बत और शिनच्यांग), अफगानिस्तान और तत्कालीन सोवियत संघ (वर्तमान में कजाकिस्तान) से घिरा हुआ था। इस प्रकार कश्मीर में भिन्न–भिन्न शासन प्रणालियाँ रही हैं। परन्तु मिलेजुले प्रयासों से अधिकांशतः कश्मीर शेष भारत से अलग बना रहा। राजनीतिक इतिहास में आए परिवर्तनों को स्थानीय समाज व संस्कृति पर मूलभूत परिवर्तनों का अनुमान लगाया जा सकता है।[1]

भौगोलिक परिप्रेक्ष्य–अवस्थिति

हिमालय की उच्च पर्वतीय श्रृंखलाओं से घिरे इस प्रदेश की भू–राजनीतिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है, क्योंकि तीन दिशाओं में चीन, रूस एवं भारत के भू–भाग अवस्थित हैं तथा उन पर चौकसी रखने के लिए अमरीका व ब्रिटेन जैसी दूरस्थ शक्तियों का भी कश्मीर में आकर्षण रहा है। उत्तर–पूर्व में चीन के मुस्लिम बहुल शिनच्यांग प्रदेश की चार सौ मील लम्बी सीमा कश्मीर में लगती है। इसको सीमा रेखा पूर्व में 450 मील तक तिब्बत के साथ लगती है। यह लगभग 350 मील तक दक्षिण–पश्चिम में भारतीय पंजाब की सीमा से लगती थी, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम में सात सौ मील तक पाकिस्तानी सीमा को छूती है, उत्तर–पश्चिम में 160 मील तक अफगानिस्तान की सीमा से लगती है। जनगणना के प्रतिवेदन में राज्य का क्षेत्रफल 12378 वर्ग मील, कश्मीर घाटी का क्षेत्रफल 8,639 वर्गमील तथा फ्रंटियर जिलों का क्षेत्रफल 63 हजार 554 वर्गमील बताया गया। 1949 में युद्धविराम के पश्चात् भारतीय प्रशासन वाले कश्मीर का क्षेत्रफल 2,22,800 वर्ग कि.मी. बताया गया है। इसमें से 83,808 वर्ग किमी. (37.5 प्रतिशत) पाकिस्तान के अधिकार में है तथा 41,500 वर्ग किमी. (19 प्रतिशत) चीन के अधिकार में है।[5]

1 फरवरी, 1949 की मध्यरात्रि को एक मिनट पहले लागू युद्धविराम के फलस्वरूप तीन पूरे जिले (अस्तोर, गिलगित, लीज, एरिया और गिलगित एजेंसी) तथा पाँच पूर्ण तहसीलों (मुजफराबाद, स्कर्दू, मीरपुर, बाग और साधनजुटी) वाला क्षेत्र युद्धविराम रेखा के उस पार पाकिस्तान ने आजाद कश्मीर का नाम दिया।

प्रदेश की भौतिक रचना अत्यन्त जटिल है। इस प्रदेश में चार मुख्य श्रेणियाँ हैं। वे कराकोरमलद्दाख मुख्य हिमालय,(जास्कर) व वीर पंजाल हैं। झेलम नदियों की सुन्दर घाटियाँ हैं। परन्तु ये सहज यातायात को बाधित करती है। कष्मीर घाटी के उत्तर में महा हिमालय में 6000 मीटर से ऊँचे 13 षिखर हैं। तथा 4500 मीटर से अधिक ऊंचे जोजिला, पोटला, बड़ा लाचाला आदि दर्रे हैं। स्पष्ट है कि कश्मीर के अन्दर विभिन्न उपक्षेत्रों में व कश्मीर का भारत से आवागमन बड़ा दुरूह है। इन्हीं से विषिष्ट अक्षेत्रीय संस्कृतियों का जन्म होता है।

क्षेत्रवार दृष्टि से कश्मीर प्रान्त में सबसे बड़ा उपक्षेत्र लद्दाख शामिल था, जिसका क्षेत्रफल साढ़े तियालीस हजार वर्गमील है। इसमें 5,838वर्गमीलक्षेत्र कष्मीर घाटी का शामिल है। जम्मू का क्षेत्रफल 10,063 वर्गमील है। सबसे सुन्दर क्षेत्र कष्मीर घाटी है जो 85 मील लम्बी और 25 मील चौड़ी है तथा समुद्री सतह से पाँच हजार फीट की ऊँचाई पर है। 18 हजार फीट की ऊँचाई पर पीर पंजालपर्वत श्रृंखलाएँ जम्मू को कश्मीर घाटी से अलग करती है। जम्मू कश्मीर

को बाहरी दुनिया से जोड़ने वाली केवल दो ही सड़के हैं – 263 मील लम्बा श्रीनगर–पठानकोट राजमार्ग और श्रीनगर–रावलपिंडी राजमार्ग 197 मील लम्बा है।

कश्मीर के उत्तर पूर्व में अस्थाई चीन प्रदेश में अत्यन अपरदित 4500 मीटर ऊंचा अन्तर्मुखी पठार स्थित है। यह लिंगत्सी तंग के मैदान के नाम से भी जाना जाता है।

इस प्रकार समूचे कश्मीर को तीन मुख्य उपक्षेत्रों में बाँटा जा सकता है।

जल प्रवाह एवं जल संसाधन

कष्मीर राज्य में तीन प्रमुख नदी क्षेत्र हैं–सिन्धु, झेलम, तथाचिनान। इनकी अनेकों सहायक नदियां हैं, जो क्रमशः उत्तर पश्चिम, पष्चिम व फिर दक्षिण की ओर बहती हैं व पाकिस्तान में प्रवेश करती हैं। विश्व के सर्वाधिक ऊंचे मार्गों में बहती हुई ये नदियां तंग व गहरी घाटियां बनाती हैं। तेज बहाव के कारण इन जल संसाधनों से कश्मीर में जल विद्युत की बड़ी सम्भावित क्षमता है लगभग 15000 मेगावाट। वह कश्मीर की अपनी आवश्यकताओं से पन्द्रह गुना अधिक है। इससे उत्तरी ग्रिड की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। कश्मीर शासन को भी इससे 1000 करोड़ रूपए की सम्भावित आय होगी। परन्तु वर्तमान में 150 मेगावाट ही जल विद्युत का उत्पादन होता है। इतने कम उत्पादन के दो कारण है। पहला, कश्मीर की तीनों प्रमुख नदियों 1960 के सिन्धु जल समझौते के तहत् पाकिस्तान के हिस्से में आई है। परिणामतः भारत सिंचाई के लिए तो इस पानी का उपयोग कर ही नहीं सकता। विद्युत हेतु बांध बनाकर पानी का उपयोग भी पाकिस्तान की सहमति से ही सम्भव है, जो कि तनावपूर्ण सम्बन्धों के रहते नामुमकिन है। एक सलाल परियोजना की सहमति हेतु भी भारत को बड़ा इंतजार करना पड़ा।

दसरे दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में सड़कों आदि आधारभूत सुविधाओं का विस्तार भी दुरूह कार्य है। फिर कश्मीर में विकास कार्यों के उपयुक्त राजनीतिक स्थिरता व शांति भी नहीं रही है। यही कारण है कि कई एक योजनाएं मूर्त रूप नहीं ले पाई हैं।

प्राकृतिक वन सम्पदा

जल संसाधनों के अतिरिक्त वन भी यहाँ की प्रमुख सम्पदा हैं जो मध्य व निम्न हिमालय क्षेत्र में अधिक व उच्च हिमालय क्षेत्र व लद्दाख में विरल हैं। मुख्यतः बाराभूमि, अनंतनाग, जम्मू, कठवा, पूंछ व डोडा में 50 प्रतिशत से अधिक भूमि पर वन पाए जाते हैं, जबकि लद्दाख में 5 प्रतिशत भूमि पर ही निम्न शिवालिक श्रेणी में भी विरल वन है। कश्मीर घाटी में व्यावसायिक महत्त्व के देवदार, कैल, फर, विलो, चीड़ आदि की उत्तम किस्म पाई जाती हैं। घाटी में ही उपजाऊ दोमट मिट्टी पाई जाती है, जो धान आदि की खेती के लिए उपयुक्त है।

जनसंख्या

राज्य का लगभग 80 प्रतिशत भाग शुष्क या उच्च पर्वतीय श्रृंखलाओं से युक्त है, अतः सहज जीवन यापन व घनी जनसंख्या के विकास के उपयुक्त नहीं है। जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर औसतन प्रतिशत रही है। 1931 में अविभाजित राज्य की जनसंख्या 35 लाख थी, जो 1941 में बढ़कर 40 लाख हो गई। 1951 में यहां कोई जनगणना नहीं हुई क्योंकि राजनीतिक हालात काफी असामान्य थे। 1961 की जनसंख्या के अनुसार भारत में बचे (कुल का लगभग 62 प्रतिशत) की जनसंख्या 35 लाख थी जो 1971 में बढ़कर .... लाख, 1981 में 60 लाख व 1991 में ..... लाख हो गई।

राज्य के उपक्षेत्रों के क्रम से आबादी के वितरण का क्रम निराला है, जो निम्नतालिका से स्पष्ट हैः

तालिका2.1
जम्मूवकश्मीरकीजनसंख्या(लाखोंमें)

उपक्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्गमील)	क्षेत्रफल (संख्या व %)	धार्मिक समूहों की जनसंख्या % में मुस्लिम	हिन्दू	अन्य
कष्मीर घाटी	5,838	31,34,904 (52.36%)	94.96	4.59	0.06
जम्मू	10,063	27,16,113 (45.39%)	29.60	66.25	4.15
लद्दाख	43,500	1,34,372 (2.24%)	46.04	2.66	61.30
कुल योग	59,401	59,87,389 (100.00%)	64.19	22.24	367

स्रोतःमुस्ताक–उर–रहमान,डिवाईडेड कश्मीर,देहली,बाहरीसन्म,1996

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक घनत्व कश्मीर घाटी में है व सबसे कम लद्दाख क्षेत्र में।वैसे कुल मिलाकर घनत्व काफी कम है जो अखिल भारतीय औसत 10.063 प्रति वर्ग कि.मी. की तुलना में 43,500 ही है।

यह भी है कि तीनों उपक्षेत्रों में धर्म की दृष्टि से भी काफी भिन्नताएं हैं। जम्मू में दो तिहाई आबादी हिन्दुओं की है व 29.66 प्रतिशत मुस्लिम है, वहीं कश्मीर में 95 प्रतिशत आबादी मुस्लिम मतावलम्बियों की है। लद्दाख में बौद्ध व मुस्लिम बराबर की संख्या में हैं। जिलावार विश्लेषण से यह विभिन्नता या धर्मानुयायियों का एकत्रीकरण और भी गहरा है।

क्षेत्रों के हिसाब से उपक्षेत्रीय भाषाओं का अंतर भी स्पष्ट है। इंपीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया के अनुसार 34 प्रतिशत लोग कश्मीरी बोलते है, जो मुख्यतः कश्मीर घाटी में केन्द्रित हैं। 15 प्रतिशत लोग डोगरी बोलते हैं एवं जम्मू क्षेत्र से सम्बद्ध है। लद्दाख में मोटिया मूल की बोलिया बोली जाती हैं।'' इस प्रकार भौगोलिक विभिन्नताएं धार्मिक व भाषायी विभिन्नताओं से मिलकर उपक्षेत्रीय अस्मिताओं को प्रखर करती हैं, जो कश्मीर राज्य को अपनी पृथक पहचान या अस्मिता के विकास में बाधक है।

इसके राजनीतिक परिणामों पर आगे विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

भाषाएँ

कश्मीरी उर्दू, डोगरा, लद्दाखी, गोजरी, बाल्टी और ददौरी पहाड़ी।''

धरातल

इस राज्य में श्रीनगर अथवा कश्मीर की मनोहर घाटी और हिमालय पर्वत की अत्यन्त ऊँची हिमाच्छादित श्रेणियाँ, पीर पंजाल, नागा पर्वत और कराकुरम है, दक्षिण पश्चिम सीमा के साथ–साथ पहाड़ के आँचल का मैदान है।''

उपज तथा उद्योग

पर्वत चीड़, चिनार, सफेदा आदि वृक्षों के वनों से ढके हुए हैं। सेब, नाशपति, आलू बुखारा, स्ट्रॉबेरी, चेरीग्लास, अंगूर, आड़ू, अखरोट, बादाम और केसर मुख्य उपज है। जम्मू के मैदानों में गेहूँ और जौ की कृषि की जाती है।

भेड़–बकरियाँ पाली जाती हैं और उनकी ऊन से सुन्दर शाल–दुशाले बनाए जाते हैं। शहतूत के पत्तों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं और रेशमी कपड़ा बनाया जाता है। कोयला जम्मू से कुछ दूरी पर जंगल गली और काला कोट में मिलता है। लोहा, ताम्बा, जस्ता, सिक्का, निकल, मैंगनीज, सोना, पत्थर, नीलम, पुखराज आदि भी पाये जाते हैं। इनमें से अधिकांश खनिज श्रीनगर व अंततनाग जैसे कश्मीर घाटी वाले भू–भाग में पाए जाते हैं। घाटी के ही फलों व चावल आदि अन्य कृषि उत्पादों की दृष्टि से भी बड़ा महत्त्व है। परन्तु श्रीनगर में घड़ियाँ और टेलीफोन के पुर्जे बनाने के कारखाने हैं। कश्मीरी कारीगर अति सुन्दर सजावटी बर्तन बनाते हैं तथा अखरोट की लकड़ी पर खुदाई का काम करने और सजावटी चित्रकारी में भी बड़े पारंगत हैं।

जिले

1. अनन्तनाग	2. बडगांव
3. बारामूला	4. गेडा
5. जम्मू	6. कठूआ
7. कार्गिल	8. कूपवाडा
9. लेह (लद्दाख)	10. पुलवामा
11. पुंछ	12. राजौरी
1.3 श्रीनगर	14. उधमपुर

चार जिले मीरपुर, मुज्जफराबाद, गिलगिल एजेन्सी और हुन्जा पाकिस्तान के अवैध अधिकार में है।''

श्रीनगर

राज्य की राजधानी है। झेलम नदी पर बर्फीले पर्वतों के मध्य में रमणीक स्थन है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है तथा घड़ियों और टेलीफोन बनाने के कारखाने हैं।

जम्मू

चिनाब की सहायक नदी तवी की घाटी में स्थित है। यहाँ सर्दी कम पड़ती है। यह राज्य की शीतकालीन राजधानी है तथा विश्वविद्यालय है।

इस्लामाबाद अनन्तनाग, पहलगाँव, वेरीनाग, बारामूला, हनमर्ग और गुलमर्ग देखने योग्य स्थान है।

गिलगिल उत्तर–पश्चिम में है। गुरेस और टिथवाल किशनगंगा नदी पर स्थित है। गुरेस और टिथवाल किशन–गंगा नदी पर स्थित है। मुज्जफराबाद, दोमेल, बरसाला, उरी और बारामूला हजारा पाकिस्तान से श्रीनगर जाने वाली सड़क पर स्थित है। कोहाल पुल झेलम नदी के आर–पार रावलपिण्डी से कश्मीर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। बाग, पुंछ, कोटली, झंगड, मीरपुर, नौशहरा, भिंबर, अखनूर, रियासी, छम्ब और जोटियाँ दक्षिण–पश्चिम की ओर स्थित है। बड़गाँव का हवाई अड्डा श्रीनगर के निकट स्थित है। लेह, लद्दाख के पर्वतीय प्रदेश का प्रधान नगर है। पूर्व में अक्साई चिन, कोंका ला, खुरनक फोर्ट, पंगोंग छो, स्पंगर छो, चुशूल और देमयौक चीनी सीमा के निकट है।

नई सड़कें, पुल, सुरंग

यातायात को सुगम बनाने के लिए रावी नदी के आर–पार एक बड़ा भारी पुल बनाया गया है, जो पंजाब के जिला गुरूदासपुरा में स्थित माधोपुर ग्राम और कठूआ के बीच है। इसके साथ ही रेल का पुल भी बनाया गया है। यहाँ से जम्मू तक रेल की लाइनें बिछाई गई है, कठुआ और जम्मू के बीच बुधी, चकदयाला, हीरानगर घगवाल, साँबा, बीजैपुर और ब्राह्मणों के स्टेशन हैं। इसके साथ–साथ ही कठूआ से एक पक्की सड़क जसरोटा, साँबा होती हुई जम्मू–नगर को जाती है। जम्मू से श्रीनगर जाने वाली सड़क शीतकाल में बर्फ पड़ने के कारण बन्द हो जाती थी, अतः पीर, पंजाल पर्वत

में जवाहर सुरंग नाम की एक बड़ी सुरंग निकालकर जम्मू और कश्मीर के बीच सदा खुली रहने वाली सड़क चालू की गई है। यह मार्ग पूर्व की अपेक्षा छोटा भी है।

सुझाव पुस्तकें

1 सुनीलचन्द्र राय, एण्ड सरदार के एम पन्निकर, हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ काश्मीर, (देहलीः 1957)

2 वीरेन्द्र ग्रोवर, द स्टोरी ऑफ द काश्मीर : यसटरडे एण्ड टुडे, देहली दीप 1995)

3. बी. एल. शर्मा, दी काश्मीर स्टोरी, (बम्बईः 1967)

4. युसुफ शर्राफ, काश्मीरिज फाइट फोर फ्रीडम 1947–48. (कराचीः 1980)

5. जे. एम. डी. सूफी, काश्मीर्स, बिह फोर फ्रीडम, (मुजफ्फराबादः 1956)

6. एच. एस. सुरजीत, काश्मीर्स एण्ड इट्स फ्यूचर, (देहली 1955)

7. बी. एल. शर्मा, दी काश्मीर्स स्टोरी, बम्बई, 1967

8. अलस्टेयर लेम्ब, : क्राइसिस इन काश्मीर 1947 टू 1966, (लन्दनः 1966)

9. पी. एल. लखनपाल, एसेन्शियल डॉक्यूमेन्ट्स एण्ड नोटस ऑन काश्मीर, (देहलीः 1965)

10. रोमेश चन्द्र, सेल्यूट टू काश्मीर,(श्रीनगरः 1946)

11. जगन्नाथ साबू, बिहाइण्ड दी कर्टेन इन काश्मीर, (देहली 1952)

12. पर्सीवल स्पीयर, इण्डिया–पाकिस्तान एण्ड दी वेस्ट, (न्यूयार्कः 1949)

13. दि हिन्दू, 7 जनवरी 1973

14. मुश्ताक उर रहमान, डिवाईडेड काश्मीर, (देहलीः बाहरी सन्स, 1996)

15. दि हिन्दू, 23 दिसम्बर 1996